International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 5 || May 2024 || PP. 151-154

'बांझ सपूती' उपन्यास में स्त्री के अनेक रूप व बाँझ की पीड़ा

Ms. Sunita Devi
Assistant Prof. of Hindi,
Tirupati College of Education, Ratia (Fatehabad),
E-Mail ID:- dr.sranga333@gmail.com,

भूमिका-

समाज एक सामाजिक विज्ञान है, जिसके अन्तर्गत कल्याणकारी क्रियाओ का अध्ययन किया है। यह मानवतावादी दर्शन, ज्ञान एवं निपूर्णता पर आधारित है। यह व्यक्तियों समूहों, समुदायों को एक सुखी एंव संपूर्ण जीवन व्यतीत करने हेतु किया गया व्यावसायिक प्रयास है। सरल भाषा में समाज का स्पष्ट अभिप्राय जनसमुह से है जो एक क्षेत्र विशेष में रहकर अपने विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमेशा संगठित व्यवस्था के तहत प्रयासरत रहते हैं। समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है यहां व्यक्तियों के बीच पाए जाने वाले सामाजिक संबंध के आधार पर की गई व्यवस्था को समाज कहा गया है ।

समाज अर्थ व परिभाषा–

'समाज' शब्द अंग्रेजी के सोसाइटी (society) शब्द का हिंदी रूपांतरण है सोसाइटी शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'societies' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है सीमित दल, मंडल या संस्था । व्युत्पत्ति के आधार पर समाज शब्द 'सम्अज' के योग से बना है। समाज रूप में समाज शब्द का प्रयोग व्यक्तियों के समूह के अर्थ में किया जाता है। दूसरे शब्दों में व्यक्तियों के वह संगठित समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है।

समाज की परिभाषा–

संक्षिप्त हिन्दू शब्द सागर में इसका अर्थ-

"सभा, समुच्चय बहुत से लोगो का झुंड या गिरोह, एक जगह पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का काम करने वाले लोगों का समूह अथवा दल पशुओं से भिन्न लोगों का समूह किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की गई सभा, सोसाइटी, संघ इत्यादि दिया गया है।" 1

ज्ञान शब्दकोश के अनुसार:

समाज का अर्थ "मिलना, एकत्र होना, समूह संघ, दल सभा समिति, अधिक्य, समाज में कार्य करने वाले का समूह, विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठित संस्था ।" 2

परिवार में स्त्री के अनेक रूप व बाँझ की पीड़ा -

समाज में जीवन जीने के लिए एक परिवार में पुरुष व स्त्री दोनों की अहम भूमिका रहती है इन दोनों के बिना हम समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह एक ही सिक्के के दो पहलू है जो एक दूसरे के बिना निरर्थक है अर्थात किसी एक के अभाव में भी जीवन रूपी नईया की खवैयां दुख पूर्ण है समाज में एक परिवार के माध्यम से ही हम स्त्री के विभिन्न रूपों को देख सकते हैं बेटी, माँ, बहु, पत्नी की भूमिका निभाते हुए वहअपना जीवन निर्वाह करती है लेकिन

इस जीवन में उसे बहुत सारे कष्टों का सामना करना पडता है। जब वो एक माँ के रूप में भूमिका अदा करती है तो उसके द्वारा पैदा की गई बेटी के साथ भेदभाव होता है और जब तक वह मां नहीं बनती तब तक समाज उसे बाँझ का दर्जा देकर अपमानित करते है । बासमती की शादी को भी 10 साल हो गए थे गांव की औरतें उसे बाँझ कहने लगी थी 10 साल बाद जब बासमती ने गर्भधारण किया तो वह बेटा होगा या बेटी के डर से भयभीत रहने लगी लेकिन दया को डर था कि "अगर हिजड़ा हुआ तो ? हिजड़े मानेंगे नहीं ले जाएंगे यदि ऐसा हुआ तो कोई उपाय ढूंढना होगा बच्चे को रहना तो मेरे साथ ही है चाहे जो पैदा हो।" 3

जहाँ पुरुष प्रधान समाज होता है वहाँ भी स्त्री की मार्मिक दशा होती है। परिवार की सुरक्षा का दायित्व पुरुष पर ही होता है वह सारे निर्णय, लेने का कार्य परिवार में करता है । 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास में परिवार के निर्णय शिवा का पति लेता है। शिवा कोई निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र नहीं है उसकी बेटी रीचा को यह पसंद नहीं होता वह हर निर्णय खुद लेना चाहती है तो शिवा उसे डांटती है पुरुष प्रधान समाज में बेटे के जन्मोत्सव पर घर का वातावरण ही बदल जाता है। बासमती भी दया की मर्जी के बिना कोई काम नहीं करती थी लेकिन दया पढ़ा लिखा होने के कारण ज्यादा हुक्कम नहीं मारता था। 'रमन की चाची' कहानी में सुंदर होने पर भी नायिका को फूहड़ कहकर उसका शोषण किया जाता है नायिका सब कुछ जानकर भी अपने प्रति तटस्थ रहती है। परिणाम स्वरुप अंतिम दिनों में उसकी और कोई ध्यान नहीं देता और बीमारी से उसकी मौत हो जाती है। स्त्री मुक्ति के इस दौर में जब तक स्त्री खुद अन्याय से मुक्त होना ना चाहे तब तक उसकी स्वतंत्रता का ढिढोरा पीटने से कोई फायदा नहीं बासमती भी शर्म लिहाज का पूरा ध्यान रखती थी

लेकिन दया थोड़ा स्त्री को दबाने जैसी रूढ़ सोच से जरा हटकर विचार रखता था "कितना कठिन है गर्भ पालना! स्त्री जीने- मरने को नहीं डरती जीवन सफल करती है पुरुष का जीवन अपने आप सुफल है वह बिना किसी कष्ट के बच्चे पर अधिकार स्त्री से अधिक मानता है ।" 4

स्त्री बाँझ रहती है तो व्यंग्य के तीखे बाणों का सामना भी करती है ।जब घर में अन्याय पूर्ण व्यवहार को हंसते हुए सहती जाती है स्त्री। इस पर भी दया ने चूप्पी नहीं साधी और खड़े हो गए उनके पक्ष में क्योंकि उनके दोस्त महेश की सोच स्त्री के प्रति रूढ़िवादी थी।जब दया ने उसे बताया "स्त्री पुरुष को जन्म देती है नस–नस पहचानती है पुरुष मिलन के सिवाय जानता ही क्या है जब देखो तब स्त्री की ओर देह– सुख की नियति से.....। स्त्री के ऊपर से पानी बह रहा है पानी से अभी नाक बची है..... फिर देखना उसकी ताकत स्त्री ही पूरी पहचान रखती है पुरुष की उसके बिना घर के सारे काम अधूरे हैं व्यंग्य के सारे हथियार रहती है उसके बिना क्रोध चढ़ता नहीं भला स्त्री के बिना कोई गली पूर्ण होती है प्रत्य: घटनाओं की जिम्मेदार स्त्री को माना जाता है यह कितना अजीब है" 5

हमेशा पुरुष पुत्र प्राप्ति की इच्छा भी स्त्री के हनन का कारण बनी है बासमती ने जब शादी के 10 साल बाद गर्भधारण किया तो अम्मा की इच्छा पोते की प्राप्ति की थी। पोती की नहीं उनका मानना था बेटा मूल है पोता सूद।

'बांझ सपूती' उपन्यास में दया बेटा.बेटी के बीच भेदभाव की दीवार पूर्णता ढह चुकी थी पर उनके दोस्तों द्वारा हमेशा उसका विरोध होता रहा इस समानता के भावों का उनके दोस्तों ने तो दया को कहा कि तुम्हें लड़की होना चाहिए था "तो कोई बलात्कार करता तो तुम उसका ऐठंकर तोड़ देते दांत काट लेते होता पोता नोचते पूरी जान लगाकर तो वह लकड़ा जाता" 6 दया के विचार हमेशा बेटी के लिए कुछ रहे हैं पर अम्मा जी पोते की प्राप्ति हेतु अनेक पाखंडों को सच मानकर दया वह बासमती को बाबा के यहां भेजती रहती ताकि पुत्र प्राप्ति हो दया इस इन शब्द सबसे बहुत परेशान

था जब तक बासमती ने गर्भधारण नहीं किया तब तक उस बच्चे ना होने की वजह से अनेक स्थान व्यंग्यों का सामना करना पड़ा महेश ने तो दया को समझाते हुए यहां तक कहां की "बांझ पशु को कोई पूछता नहीं कसाई को देना पड़ता है। आप अपना जीवन व्यर्थ न कीजिए उम्र है दूसरी शादी कर लीजिए" 7

लेकिन दया ने हमेशा औरत का पक्ष लिया और कहा मैं तो हमेशा औरत के पक्ष में हूँ आदमी का खराब पन्ना खत्म हो तो "स्त्री को सब हीन समझते हैं जबकि वह माता है, पत्नी है, बहन है पूज्य और भावुक संबंध स्त्री से ही जुड़ते हैं। प्रेम हो या पूजा स्त्री का जुड़ना जरूरी है प्राचीन काल में स्त्री के सम्मान में कुछ अधिक ही लिखा गया है तो क्या अति सम्मान देखकर स्त्री की आवाज को दबाया गया था शायद इसी मान सम्मान के बोझ तले ही वह प्रताड़ित होती रही सर दर्द झेलती रही मुंह तक नहीं खोला जिस औरत का मुंह खुला उसकी प्रतिष्ठा जो मिल करने के लिए दिए जबरदस्ती सेक्स किया गया कैसी.कैसी कथाएं हम पढ़ चुके हैं क्या लाभ पढ़ने का थोड़ी देर के लिए स्त्री बाहर निकली नहीं की पुरुष का शक पीछे लगा ।" 8

अक्सर हम यह बात बहुत बात सुनते में पढ़ते हैं कि औरत की सबसे बड़ी दुश्मन औरत ही होती है औरत घर को सवाल सकती है और बिगाड़ भी सकती है गोरा जो की दया की मां है वह तो कहती है कि परिवार बहुत कुछ बड़ी बहू पर निर्भर करता है दया भी इस बात को मानते हैं की पत्नी की हमेशा पतिव्रता धर्म का पालन करें "ऐसा कहा गया है कि पति को सेवा करने से स्त्री के लिए स्वर्ग का द्वार खुल खुल जाता है यहां मैं स्वर्ग को लेकर भले सहमत ना हो लेकिन पति की सेवा होनी चाहिए" 9 अब दया हमेशा डायरी लिखने में इंसान जिसे उसके मित्र बासमती के आधार पर आगे बढ़ाने के लिए मजाक बनाते रहते हैं। "देखो दया ! औरत रहस्य तो है इससे सभी मानते हैं उसके बिना घर जड़ झंकार खेत का जंगल भी कहां साफ होता है जैसे एक गाड़ी है लेकिन उसमें तेल नहीं है औरत गाड़ी का तेल है तुम्हारी कथा में बासमती है तो कैसे नहीं बढ़ेगी कथा? औरत कभी अंत नहीं रही।" 10

स्त्री इतनी सुंदर वह सुख देने वाली है तो उसका वध क्यों?

शास्त्रों में स्त्री का वध निषेध है इसी कारण से युद्ध में प्रत्यय स्त्रियों को रखैल या दासी बनाया जाता था श्रम के सुख काम.सुख का भी ध्यान था।..... जो नामधारी थे जाति से, वैभव से, धन से या राज्य से वह कन्या जन्म को तोहीन समझते थे और कन्या शिशु को जिंदा जमीन में गढ़ देते थे अपने सुख और वंश के लिए स्त्री का अपहरण होता था या कर्म कर ली जाती थी कन्या शिशु को नमक चटकार भी मार डाला जाता था कुछ तो अफीम चटा देते या कोई जहर.....।" 11

बेटी का जन्म मतलब ही चिंता माना जाता है क्योंकि जब वह जन्म लेती है तो परिवार वाले उसे भेदभाव के साथ हैं भावना से देखते हैं और जैसे.जैसे बड़ी होती जाती है तो उसके दहेज की चिंता परिवार वालों को परेशान करती है अगर घर में रहते लड़की को कुछ तकलीफ भी होती है तो लोग कहते हैं इतनी जल्दी डॉक्टर को दिखाने की जरूरत नहीं है "संयोग से मोहिनी कभी बकिया बकइयाॅं चलते समझ मिट्टी या गोबर मुंह में डालते तो गोरा कहती थी लड़की है मरेगी नहीं जब जहर माहुर बचा लेगी स्त्री समाज का विष पी जाती है।" 12और यह दहेज प्रथा जो आज लड़की के लिए एक अभिशाप बन चुकी है दहेज के खातिर ससुराल पक्ष के द्वारा लड़की पर अनेक अत्याचार किए जाते हैं जिससे उसकी मानसिक व शारीरिक शोषण होता है।

लेकिन पढ़ा लिखा गया स्त्री के प्रति अपनी अच्छी सोच बनाते हुए हैं "स्त्री आबाद है तो घर आबाद है उसके बिना सब बर्बाद है। उसका होना कितना जरूरी है! फिर क्यों मारेगी वह? स्त्री जल्दी मरेगी नहीं इसलिए कि वह संस्कृति है, वह संस्कार है, वह व्यवहार है स्त्री के बिना किसी भी प्रकार का जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती ।" 13

जिस घर में औरतों का सम्मान होता है वही घर खुशहाल होता है गांव में औरतें ले जाने छुपाने छुपाने के कारण खुद ही अपना संसार छोटा करती है वह कुछ आदरणीय और स्नेही संबंधों को ही सब कुछ जानती मानती सहती रहती है।

संदर्भ सूची-

1. संपादक रामचंद्र वर्मा,संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, पृष्ठ.677
2. मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, ज्ञान शब्दकोश, पृष्ठ.817
3. वीरेंद्र सारंग, बांझ सपूती, पृष्ठ.12-13
4. वही, पृष्ठ.12
5. वही, पृष्ठ. 15
6. वही, पृष्ठ. 36
7. वही, पृष्ठ. 76
8. वही, पृष्ठ. 82
9. वही, पृष्ठ .110
10. वही, पृष्ठ .162
11. वही, पृष्ठ.181-182
12. वही पृष्ठ 195
13. वही, पृष्ठ. 198